

जिस्म की जरूरत-5

“जी नहीं... यह हमारी मम्मी का हुक्म है और उनकी बात कोई नहीं टाल सकता... तो जल्दी से दूध का बर्तन अन्दर रख दीजिये और हमारे साथ चलिए, वरना अगर... [\[Continue Reading\]](#) ...”

Story By: sameer chaudhary (sameer_chaudhary)

Posted: Wednesday, October 15th, 2014

Categories: [पड़ोसी](#)

Online version: [जिस्म की जरूरत-5](#)

जिस्म की जरूरत-5

‘जी नहीं... यह हमारी मम्मी का हुक्म है और उनकी बात कोई नहीं टाल सकता... तो जल्दी से दूध का बर्तन अन्दर रख दीजिये और हमारे साथ चलिए, वरना अगर मम्मी नाराज़ हो गई तो फिर बहुत बुरा होगा।’ वन्दना ने मुझे डराते हुए कहा।

मैं तो खुद ही उसकी मम्मी से मिलने को तड़प रहा था लेकिन मैंने उसके सामने थोड़ा सा नाटक किया और फिर दूध का बर्तन अपनी रसोई में रख कर उसके साथ चल पड़ा।

मैंने एक बात नोटिस की कि रेणुका जी का नाम सुनते ही मेरी नज़र वन्दना की जवानी को भूल गई और उसकी मदमस्त चूचियों को इतने पास होते हुए भी बिना उनकी तरफ ध्यान दिए हुए रेणुका जी से मिलने की चाहत लिए उसके घर की तरफ चल पड़ा।

शायद रेणुका जी के गदराये बदन की कशिश ही ऐसी थी कि मैं सब भूल गया।

दरवाज़े से अन्दर घुसते ही सामने रेणुका एक गुलाबी रंग की साड़ी में खड़ी खाने की मेज पर नाश्ता लगाती नज़र आई।

गुलाबी रंग में उनका रूप और भी निखर कर सामने आ रहा था।

मैचिंग ब्लाउज वो भी बिना बाहों वाली... उफ़फ़... उनके कोमल और भरी भरी बाहें... और उन बाहों पे कन्धों से टपकता हुआ पानी... शायद वो अभी अभी नाहा कर निकलीं थीं तभी उनके बाल भीगे हुए थे और उनसे पानी टपक कर उनके कन्धों पे उनकी ब्लाउज को आधा भिगोये जा रहा था।

उम्म... कमाल का सेक्सी नज़ारा था... जी में आया कि उनके कन्धों पे टपकते पानी की एक एक बूँद अपने होठों से पी लूँ... और उनकी गोरी गोरी बाँहों को अपनी हथेलियों से

सहला दूँ!

मेरे पहुँचते ही उन्होंने एक नज़र मेरी तरफ देखा और फिर अपनी नज़रें झुका कर मुस्कराती हुई मुझे बैठने का इशारा किया।

उनकी आँखों में एक अजीब सी मुस्कान और शर्म भरी हुई थी... शायद मुझे देख कर उन्हें कल सुबह की बात याद आ गई हो !!

यह ख्याल मेरे मन में भी आया और मेरे बदन में भी यह सोच कर एक सिहरन सी उठी। मैंने बिना कुछ कहे बैठ कर चुपचाप इधर उधर देखते हुए नाश्ते की प्लेट की तरफ अपना ध्यान लगाया।

कहीं न कहीं मेरे मन में यह ख्याल भी आ रहा था कि कहीं मेरी कल की हरकतों की वजह से वो मुझे किसी गलत तरह का इंसान न समझ बैठी हो...

शायद तभी आज वो खुद दूध देने नहीं आई... !!

यूँ तो मैं दिल्ली का एक खेला खाया लड़का हूँ लेकिन कहीं न कहीं अपने बिहारी खून के अन्दर मौजूद अपने बिहारी समाज की मान मर्यादाओं का ख्याल भी है मुझे...

और वो ख्याल ये कहता है कि हर औरत एक जैसी नहीं हो सकती... हर औरत बस लंड देख कर उसके लिए पागल नहीं हो जाती और न ही उसे लेने के लिए झट से तैयार हो जाती है।

इन ख्यालों को अपने मन में बसाये मैंने कोई उलटी सीधी हरकत न करने का फैसला लिया और चुपचाप खाने लगा।

मेरे सामने वन्दना भी बैठ कर नाश्ता करने लगी और अपनी बातूनी स्वाभाव के अनुसार इधर उधर की बातें करने लगी।

मेरा ध्यान उसकी बातों पे जा ही नहीं रहा था और मैं चोर नज़रों से रेणुका जी की तरफ

चुपके चुपके देख लिया करता था।

रेणुका जी भी बिल्कुल सामान्य होकर हमें खिला रही थीं और बीच बीच में रसोई से गर्मा गर्म परांठे भी ला रही थीं।

हमने अपना नाश्ता खत्म किया और मेज से उठ गए।

‘अरे जरा रुकिए... थोड़ा जूस पी लीजिये... सेहत के लिए अच्छा होता है।’ रेणुका जी की मधुर आवाज़ मेरे कानों में पड़ी।

जब से मैं आया था तब से उनकी एक भी आवाज़ नहीं सुनी थी... और जब सुनी तो बस अचानक से उनकी आँखों में झांक पड़ा।

उनकी आँखें मुझे बड़ा कंप्यूज कर रही थीं... उन आँखों में एक चमक और एक प्रेम भाव था जिसे मैं समझ नहीं पा रहा था.. यह उनकी शालीनता और शराफत भरे इंसानियत के नाते दिखाई देने वाला प्रेम था या उनके मन में भी कल सुबह के बाद कुछ दूसरे ही प्रेम भाव उत्पन्न हुए थे, यह कहना मुश्किल हो रहा था।

‘उफफ... माँ, आपको पता है न कि मुझे जूस पसंद नहीं है... मुझे देर हो रही है और मैं कॉलेज जा रही हूँ...’ वन्दना ने बुरा सा मुँह बनाया और अपना बैग उठा कर दरवाज़े की तरफ दौड़ पड़ी।

‘अरे वन्दना थोड़ा सा तो पी ले बेटा... रुक तो सही... रुक जा...’

रेणुका जी उसके पीछे आवाज़ लगाती हुई दरवाज़े तक गईं लेकिन वन्दना तब तक जा चुकी थी।

‘यह लड़की भी न... बिल्कुल तूफ़ान हो गई है... बात ही नहीं सुनती।’ रेणुका मुस्कराती और बुदबुदाती हुई वापस आई और मेरे नज़दीक आकर खड़ी हो गई।

‘मैं भी चलता हूँ... काफी देर हो गई है...’ मैंने उनकी तरफ देखते हुए मुँह बनाया और ऐसा दिखाया जैसे मुझे जाने का मन तो नहीं है लेकिन मज़बूरी है इसलिए जाना पड़ेगा।

‘अरे अब कम से कम आप तो मेरी बात सुन लीजिये... ये बाप और बेटी तो मेरी कभी सुनते नहीं... !!’ वन्दना ने थोड़ा गुस्सा दिखाते हुए कहा और मेरा कन्धा पकड़ कर मुझे वापस बिठा दिया।

उनका हाथ मेरे कंधे पर पड़ा तो उस नर्म एहसास ने मेरे बदन में एक झुरझुरी सी पैदा कर दी और मैं मस्त होकर बैठ गया और उनकी तरफ देख कर हंसने लगा।

रेणुका जी ने जल्दी से फ्रिज से जूस का जग निकला और गिलास में जूस भरने लगीं।

मैं एकटक उनके चेहरे और फिर उनके सीने के उभारों को देखने लगा...

वन्दना को रोकने के लिए उन्होंने तेज़ क़दमों का इस्तेमाल किया था जिसकी वजह से उनकी साँसें तेज़ हो गई थीं और उसका परिणाम मेरी आँखों के सामने था।

जूस का गिलास भरते ही उन्होंने मेरी तरफ देखा तो मेरी नज़रों को अपने उभारों पे टिका हुआ देख लिया और यह देख कर उनका चेहरा फिर से शर्म से लाल हो गया और उन्होंने अपने निचले होठों को दांतों से काट लिया।

पता नहीं इस वक़्त मेरी मर्यादाओं को कौन सा सांप सूँघ गया था जो मैं बिना अपनी नज़रें हटाये उनके चेहरे की तरफ एकटक देखता रहा...

रेणुका जी भी मेरी आँखों में देखते हुए वैसे ही खड़ी रहीं और फिर धीरे से गिलास मेरी तरफ बढ़ा दिया।

हमारी नज़रें अब भी एक दूसरे पे टिकी हुई थीं.. और इसी अवस्था में मैंने हाथ आगे बढ़ा

कर गिलास पकड़ा और सहसा मेरी उँगलियाँ उनकी उँगलियों से टकरा गईं ।

एक नर्म और रेशमी एहसास... साथ ही साथ एक मचल जाने वाली फीलिंग.. मेरी उँगलियों ने उनकी उँगलियों को दबा दिया ।

रेणुका जी ने जैसे ही अपनी उँगलियों पे मेरी उँगलियों का स्पर्श महसूस किया वैसे ही मानो झटका लगा हो और उन्होंने अपने हाथ खींच लिए.. और शरमा कर अपनी नज़रें फेर लीं ।

मैंने एक सांस में पूरा जूस का गिलास खाली कर दिया और गिलास को उनकी तरफ बढ़ा दिया ।

इस बार उन्होंने सावधानी से बिना उँगलियों को छुए गिलास पकड़ लिया और ऐसे मुस्कराई मानो उन्हें पता था कि मैं उन्हें छूने की कोशिश करूँगा और उन्होंने मुझे ललचाते हुए अपने आपको छूने से बचा लिया हो ।

एक पल को हमारे बीच बिल्कुल खामोशी सी छाई रही मानो वो मेरी प्रेमिका हो और मैं उनसे अपने प्रेम का इजहार करना चाहता हूँ लेकिन कुछ कह नहीं पा रहा... बड़ी ही अजीब सी भावनाएँ उठ रही थीं मेरे मन में... शायद उनके मन में भी हो !

‘कल भी देर तक सोने का इरादा तो नहीं है न... कहीं आदत न बिगड़ जाए आपकी ?’
रेणुका जी ने चुप्पी तोड़ते हुए उस स्थिति को सँभालते हुए कहा ।

‘अगर आप हर रोज़ कल की तरह दूध पहुँचाने आये तो मैं रोज़ ही देर से उठा करूँगा...’
मैंने लाख कोशिश करी थी लेकिन चांस मारने की आदत से मजबूर मैं यह बोल ही पड़ा ।

‘हा हा हा... फिर तो आपकी सारी आदतें ही खराब हो जाएँगी समीर बाबू... !!’ रेणुका जी

ने हंसते हुए ठिठोली करते हुए मुझे कहा और अपनी आँखों से मुझे एक मौन सा इशारा करने लगीं।

‘कोई बात नहीं रेणुका जी... हम अपनी सारी आदतों को बिगाड़ने के लिए तैयार हैं...’ मैंने उनकी तरफ अपने कदम बढ़ाये और उनसे लगभग सटते हुए कहा।

‘सोच लीजिये, फिर यह न कहियेगा कि हमारे यहाँ आकर आप बिगड़ गए?’ एक शरारत भरी हसीं के साथ उनकी इस बात ने मुझे यह यकीन दिला दिया कि शायद आग दोनों तरफ लगी हुई है।

मैंने उनके करीब जाकर बिना किसी हरकत के उनकी आँखों में झाँका और अपने दिल में उठ रहे अरमानों का इजहार करने की कोशिश करी... लेकिन बिना कुछ कहे।

मैं उनकी तरफ से अगले कदम का इंतज़ार करने लगा... लेकिन वो बस यूँ ही खड़ी मुस्कुराती रहीं... हाँ उनकी साँसें जरूर तेज़ चलने लगी थीं और उनके उभारों को ऊपर नीचे करके मुझे यह एहसास दिला रही थीं कि शायद रास्ता साफ़ है।

पर मैं थोड़ा रुका और ये सोचा कि थोड़ी और तसल्ली कर ली जाए... कहीं यह बस मजाक न हो... और मेरी किसी हरकत का उल्टा असर न हो जाए।

‘अब मैं चलता हूँ रेणुका भाभी... ऑफिस भी जाना है और काम भी बहुत है... फिर मिलेंगे।’ मैंने उनसे अलग होते हुए कहा और वापस मुड़ने लगा।

‘ठीक है समीर जी, अब तो रोज़ ही मिलना मिलाना लगा रहेगा...’ रेणुका ने मेरे पीछे से एक मादक आवाज़ में कहा, जिसे सुनकर मैंने फिर से उनकी तरफ पलट कर देखा और उन्हें मुस्कुराता हुआ पाया।

मेरा तीर निशाने पर लग रहा था। बस थोड़ी सी तसल्ली और...

मैं बड़े ही अच्छे मूड में ऑफिस पहुंचा और फिर रेणुका के ख्यालों के साथ काम में लग गया... लेकिन जब सामने एक मदमस्त गदराया हुआ माल आपको अपनी चूत का स्वाद चखने का इशारा कर रहा हो और आपको भी ऐसा ही करने का मन हो तो किस कमबख्त को काम में मन लगता है...

जैसे तैसे मैंने ऑफिस का सारा काम निपटाया और शाम होते ही घर की तरफ भागा।

कहानी जारी रहेगी।

आप अपने विचार भेज सकते हैं।

